COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
ISSN: 0976-5301
Volume No: 16, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
PP: 31-36
Journal Website www.coherencejournal.in

सुभद्रा–महादेवी के गद्य-साहित्य का तुलनात्मक विवेचन

खुशबू कुमारी
(शोधार्थी)
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

सुभद्रा और महादेवी के गद्य भिन्न हैं खास।

सरल भाषा सुभद्रा में, महादेवी तत्सम न्यास॥

शोध-सार–

सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की दो महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिन्होंने गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। यद्यपि दोनों को मुख्यतः कवयित्री के रूप में जाना जाता है, फिर भी उनके गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना, स्त्री-जीवन, मानवीय संवेदना तथा राष्ट्रीय भावना का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य दोनों लेखिकाओं के गद्य साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करना है, ताकि उनकी वैचारिक समानताओं एवं भिन्नताओं को स्पष्ट किया जा सके।

सुभद्रा कुमारी चौहान के गद्य में राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक संघर्ष तथा सामान्य जनजीवन की सहज अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और जनसामान्य के निकट है। वे अपने गद्य में समाज की कुरीतियों, स्त्री-पीड़ा तथा देशभक्ति को अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनके कथानकों में यथार्थ और संघर्ष की प्रधानता मिलती है।

दूसरी ओर, महादेवी वर्मा का गद्य भावप्रधान, संवेदनशील तथा दार्शनिक प्रवृत्ति का है। उनके निबंधों और संस्मरणों में करुणा, मानवीय मूल्य, नारी चेतना और आत्मानुभूति का गहन स्वर दिखाई देता है। उनकी भाषा साहित्यिक, कलात्मक तथा प्रतीकात्मक है। वे मनुष्य और पशु-पक्षियों के संबंधों को भी अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती हैं।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो दोनों लेखिकाओं ने नारी जीवन की समस्याओं को प्रमुखता दी है, किंतु उनकी अभिव्यक्ति शैली अलग है। सुभद्रा का गद्य सामाजिक यथार्थ और क्रांतिकारी चेतना से जुड़ा है, जबकि महादेवी का गद्य आत्मिक संवेदना और मनोवैज्ञानिक गहराई से संपन्न है। दोनों के साहित्य में स्त्री की स्वतंत्रता, सम्मान और संवेदना के प्रति गहरी प्रतिबद्धता दिखाई देती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य हिंदी गद्य परंपरा को समृद्ध करने वाला है। दोनों लेखिकाओं ने अपने-अपने दृष्टिकोण से समाज, नारी और मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की तथा हिंदी साहित्य को नई दिशा दी।

बीज शब्द– तत्सम, तद्भव, आभ्यांतरिक, उदयाचल, दिग-दिगन्त, विकीर्ण गौरवान्वित, निनादित।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

प्रस्तावना–

हिन्दी साहित्य के गद्य-पद्याकाश पर दोनों प्रज्वलित साहित्यकार चन्द्र और सूर्य की तरह विद्यमान हैं। दोनों में सख्य-भाव की भी प्रधानता है क्योंकि दोनों एक ही विद्यालय के विद्यार्थी रहे हैं और दोनों ही बाल्यकाल से ही कलम उठाने की कला सीख लीं। दोनों की कलम से पहले निकली कविता और बाद में निकला गद्य। ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों आभ्यांतरिक रूप में सूक्ष्म-सात्विक भावों के सार में अपने आप में हिन्दी साहित्य ही हैं क्योंकि हिन्दी साहित्य के उदयाचल पर भी पहले आया पद्य, तब आया गद्य। दोनों ने हिन्दी-गद्य-गौरव को हृदय से गौरवान्वित किया। लेकिन दोनों के गद्य में समानताएँ कहीं से भी नहीं दिखती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने गद्य का विकास हिन्दी कहानी लेखन में किया जबकि कहानीकार की तरह महादेवी वर्मा ने एक भी कहानी नहीं लिखीं। हां! उनके संस्मरण आधारित पशु-पक्षियों से संबंधित रेखाचित्र में कहानीपन का भाव आ गया, जिसके कारण उनके कुछ संस्मरण कहानी के रूप में भी रेखांकित किए जा रहे हैं जबकि उनका गद्य संस्मरण का मूल है और उनकी स्मृति अनुभव का वह फूल है, जिसकी खुशबू दिग-दिगन्त तक विकीर्ण हो रही है।

दोनों साहित्यकार सहेलियों में सुभद्रा जी महादेवी की ज्येष्ठा सिद्ध हैं। इसलिए सर्वप्रथम सुभद्रा-गद्य का विन्यास जरूरी है तत्पश्चात महादेवी का।

राष्ट्रीय चेतना की प्रखर कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रीयता की कलकल निनादित धारा आज भी बह रही है। इनका गद्य भी उतना ही सरल, सहज, स्पष्ट, ओजपूर्ण एवं जीवन से जुड़ा हुआ है।

सुभद्रा-महादेवी-गद्य-साहित्य–

कहानी– सुभद्रा जी की कहानियाँ सुधारवादी, उद्देश्यपरक तथा घटना प्रधान हैं। राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिम्ब इन पर स्पष्ट परिलक्षित होता है।

1. बिखरे मोती - 1932

2. उन्मादिनी - 1934

3. सीधे सादे चित्र – 1946

नारी जीवन–

इनकी कहानियों का विषय-वस्तु पारिवारिक-प्रेम, दया, करुणा एवं पारिवारिक स्त्री की दयनीय दशा का विवरण प्रस्तुत करती है। समाज में स्त्री की दयनीय दशा, विधवा जीवन, दहेज-प्रथा। 'माचिस की तीली' प्रसिद्ध कहानी है। 'दृष्टिकोण', 'होली' आदि कहानी में भी घर-परिवार में पति-प्रताड़िता नारी का जिक्र परिलक्षित होता है। दयनीय स्थिति का चित्रण मिलता है। 'दृष्टिकोण' कहानी में सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारतीय समाज की रूढ़ियों की नारी-स्वतंत्रता एवं मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता के साथ

© Copyright @ Authors

चित्रित किया है। इसमें निर्मला, समाज में द्वारा बहिष्कृत बिट्टन (अपनी महिला मित्र) को घर में शरण देना चाहती है।

यथा– "निर्मला ने कहा, 'तुम्हारी ही तरह मैं भी बिना घर की हूँ बहन! यदि इस घर पर मेरा कुछ भी अधिकार होता तो मैं तुम्हें इस कष्ट के समय कहीं भी न जाने देती। क्या करूँ, विवश हूँ।"[१] स्पष्ट होता है कि कहने को स्त्री को देवी माना जाता है, घर की लक्ष्मी माना जाता है परन्तु वास्तव में उसका अपना घर भी नहीं होता।

'होली' कहानी भी अत्यन्त मार्मिक और भावनात्मक कहानी है। इसमें समाज में परिवार में नारी की घर-परिवार में नारी की बेबसी और गरीबी के दर्द को उजागर किया गया है। "करुणा जुए में जीते हुए रुपयों को मिट्टी समझती थी। गरीबी से दिन काटना उसे स्वीकार था परन्तु चरित्र को भ्रष्ट करके धनवान बनना उसे प्रिय न था। वह अपने पति जगत प्रसाद से बहुत डरती थी, इसलिए अपनी अपनी बात अपने स्वतंत्र विचार वह कभी भी प्रकट न कर सकती थी।"[२]

इस कहानी के माध्यम से सुभद्रा जी ने आदर्श है, नारी के जीवन के चित्र गहराई से चित्रित किया है, जिससे स्पष्ट हुआ है कि आदर्श नारी-जीवन के किसी भी परिस्थिति में चरित्र-हीनता की शिकार नहीं होती है। नारी की यहीं अडिगता उसे अपनी प्रतिभा का परचम फहराने का अवसर प्रदान कर देती है।

राष्ट्रीयता– सुभद्रा कुमारी चौहान के पद्य-साहित्य के साथ-साथ गद्य-साहित्य में साहित्य में भी राष्ट्रीयता की भावना हृदय की गहराइयों से चित्रित किया गया है। "शौर्य, वात्सल्य और लोक-चेतना की संवेदनाओं से परिपूर्ण सुभद्रा जी का जीवन बहुआयामी संघर्षों से भरा रहा है। उन्होंने देश-प्रेम और देश-गौरव के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया। देश-प्रेम सुभद्रा जी के लिए साधना थी।"[३] स्पष्ट होता है कि सुभद्रा जी के रोम-रोम में देश-प्रेम की भावना भरी हुई थी। उनकी कहानी 'राही', एक मार्मिक कहानी है जो भूख से व्याकुल बच्चे के लिए चोरी करने को मजबूर एक गरीब महिला (राही) और देश के लिए जेल गई एक अमीर महिला (अनीता) के बीच संवाद और विचारधारा पर आधारित है। "अनीता की आत्मा बोल उठी वास्तव में सच्ची देशभक्ति तो इन गरीबों के कष्ट निवारण में है। ये कोई दूसरे नहीं हैं, हमारी ही भारत माता की संतानें हैं। इन हजारों, लाखों भूखे नंगे भाई-बहनों की यदि हम कुछ सेवा कर सकें, तो सचमुच हमने अपने देश की सेवा की।"[४] उद्धृत पंक्तियों से भी स्पष्ट होता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान के हृदय में मुख्य रूप से भारत माता ही आसीन थीं। इसका कारण उनके व्यक्तित्व और परिस्थितियों को ही समझा जाता है। सारस्वत-सुमन से सुरभित नैहर से निकलने के बाद भी वह विराट साहित्यिक गुलसन की ही मालिन बनकर जिस ससुराल में आयीं उसमें उनके पति भी राष्ट्रीय-आन्दोलन के जाँबाज सिपाही और प्रख्यात नाटककार सिद्ध हो चुके थे।

सुभद्रा जी पति के साथ गांधीजी की आह्वान पर अंग्रेजों का विरोध करती हुई जेल भी जा चुकी हैं। यही कारण है कि उनके साहित्य में राष्ट्र-प्रेम-ध्वज शान से लहराता हुआ दृष्टिगत हो रहा है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा-शैली सरल और सहज अर्थगम्य प्रतीत होती है। इनकी कहानियों में मुहावरेदार शब्दों की कमी नहीं है। पूर्णतः तद्भव-प्रकाशित शब्दों का ही व्यवहार इन्होंने अपने गद्य-

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

साहित्य में किया है, जिसके कारण सामान्य पढ़े-लिखे नर-नारियों में भी प्रख्यात हो गई - सुभद्रा कुमारी चौहान।

महादेवी वर्मा–

सुभद्रा जी के साथ सख्य-भाव में रहने वाली महादेवी वर्मा पर सुभद्रा जी के व्यक्तित्व का प्रभाव तो पड़ा, लेकिन सुभद्रा जी की तरह इन्होंने कहानी का प्रणयन नहीं किया, किन्तु इन्होंने संस्मरण और निबन्धों के माध्यम से जिस प्रकार से गद्य को गौरवान्वित किया है- वह अनोखा है, अद्वितीय है और अतुलनीय है। इनके कुछ संस्मरण बतौर कहानी भी स्वीकार किए जा चुके हैं। ऐसी संस्मरणात्मक कहानियों में 'रामा', 'बिन्दा', 'घिसा' एवं 'बदलू' के साथ-साथ स्मृति-रेखाओं से निर्मित कहानी 'भक्तिन', 'ठकुरी बाबा' और 'गुंगिया' विशेष रूप से रेखांकित है, जिसके माध्यम से महादेवी जी ने जीवन के गूढ़ उलझनों को सुलझाने का प्रयास किया है। इन कहानियों से महादेवी जी का पशु-पक्षी-प्रेम भी गहराई से रेखांकित होता है। एकाकी जीवन में पशु-पक्षियों के प्रति समर्पित रहने की कला किसी को महादेवी जी से सीखनी चाहिए क्योंकि उन्होंने वैसे पक्षियों और पशुओं की भी सेवा की, जो पशु-पक्षी बाजार में पिंजरे में बंद घायल पाए गए। इन्होंने अपने पालतू पशुओं के विषय में लिखा है– "अतीत में मिले खोये व्यक्तियों या पशु-पक्षियों को स्मरण करते समय कभी-कभी मेरे इतने आँसू गिरे कि लिखा हुआ कागज गीला हो जाने के कारण नष्ट हो गया है और कभी-कभी हँसी ने मुझे इतना अस्थिर कर दिया है कि लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी है।"[५] इससे स्पष्ट होता है कि महादेवी जी किसी भी काम को हृदय से करती थीं। हृदययुक्ता होने के कारण ही पशु-पक्षियों की पीड़ा को देखकर भी वह दर्द-ए-दरिया की तरह बहने लगती थीं और थोड़ी सी खुशी मिलते ही वह हृदय खोलकर हँसने लगती थीं।

उनकी संस्मरणात्मक कहानियों में 'रामो' खास प्रतीत होती है। होता है। वह देखने में कुरूप था परन्तु उससे भव्य साथी की कल्पना भी हमें असह्य थी। महादेवी जी के अनुसार– "वास्तव में जीवन सौंदर्य की आत्माएँ, पर वह सामंजस्य की रेखाओं में जितनी मूर्तिमत्ता चाहता है, उतनी विषमता में नहीं। जैसे-जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे-वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं।"[६] इन पंक्तियों के माध्यम से महादेवी जी ने कुरूपता पर कर्म-सौंदर्य का रेखांकन किया है। कुरूप होते हुए भी 'रामा' कर्मवीर था, सेवा के प्रति सदैव समर्पित रहता था, जिसके कारण महादेवी जी को वह हृदय समान था।

'रामो' बुन्देलखण्ड से सौतेली माता के अत्याचार से ऊब कर भागा था और इन्दौर पहुँच गया जहां से महादेवी की माँ उसे अपने घर ले आयी थी, तब महादेवी बाल्यकाल के झूले पर ही झूल रही थी।

महादेवी वर्मा प्रणीत दूसरी संस्मरणात्मक कहानी 'बिन्दा' से स्पष्ट होता है कि वह महादेवी वर्मा की बाल-सखी थी। उसकी माँ पंडिताइन चाची और बिन्दा नयी माँ कहती थी। इससे स्पष्ट होता है कि बिन्दा सौतेली माँ के सौतेलेपन का शिकार भी हुई। इसका वर्णन करते हुए महादेवी वर्मा ने लिखा है– "पड़ोस के घर में पंडिताइन चाची का स्वर उच्च से उच्चतर होता रहता था। यदि उस गर्जन-तर्जन का कोई अर्थ समझ में न आता तो मैं उसे श्यामा के हँसाने रँभाने के समान स्नेह का प्रदर्शन भी समझ

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

सकती थी, परन्तु उसकी शब्दावली परिचित होने के कारण ही कुछ उलझन पैदा करने वाली थी। उठी है या आऊँ, बैल के-से दीदे क्या निकाल रही है, 'मोहन का दूध कब गर्म होगा', 'अभागी मरती भी नहीं' आदि वाक्यों में जो कठोरता की धारा बहती रहती थी, उससे मेरा अबोध मन भी जान ही लेता था।"[७] उद्धृत उद्धरण से स्पष्ट होता है कि बिन्दा की सौतेली माँ उसके साथ सबेरे होते ही दुर्व्यवहार शुरू कर देती थी, यानि अमंगल शब्दों से ही बिन्दा का प्रभातकाल होता था, जो महादेवी जी के बाल-हृदय में काँटों की तरह चुभता रहता था।

रामो की तरह ही महादेवी वर्मा ने 'घिसा' का भी चित्र खींचा है, जो माता के कुव्यवहार के कारण दुःखी जीवन जीता है, उसे शनिपात भी हो जाता है, जिसमें महादेवी उसकी सेवा करती है और अन्त में 'घिसा' भी दुर्दिन के पत्थर पर घिसते घिसते इतना घिस जाता है कि उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। महादेवी जी ने लिखा है– "उसका बाप था तो कोरी, पर बड़ा ही अभिमानी। डलिया आदि बुनने का काम छोड़कर वह थोड़ी थोड़ी बढ़ईगिरी सीख आया, इतना ही नहीं एक दिन चुपचाप दूसरे गाँव से युवती वधू लाकर उसने अपने गाँव सब सजातीय सुन्दरी बालाओं को उपेक्षित और उनके योग्य माता-पिता को निराश कर डाला।"[८] महादेवी जी ने उसके पिता के चरित्र के साथ ही उसके जन्म की कथा लिखा है और उसकी माँ को सिंहनी के समान बताया है क्योंकि उसकी माँ कहती रहती थी– 'हम सिंह के मेहरारू होयके का सियारन के जावा।' इतना कहकर विधवा के समान जीने लगी, क्योंकि उसका पति दिवंगत हो गया। इसके बाद 'घिसा' का जीवन और भी मजबूरी का पर्याय बन गया। महादेवी वर्मा जी ने इसकी सहायता की। संस्मरण कथा का अंत घिसा के रातभर रोते रहने से ही हुआ।

'ठकुरी बाबा' शीर्षक संस्मरणात्मक कहानी में महादेवी जी ने स्पष्ट किया है कि भक्तिन के साथ जब वह कल्पवास मेले में पहुँची, वहीं उनकी मुलाकात ठकुरी बाबा से हुई। ठकुरी बाबा साधु थे, सहयोगी थे और ईश्वर के प्रति अपने आपको समर्पित समझते थे। महादेवी जी ने लिखा है– "ठकुरी बाबा तो सबको अपना अतिथि बनाने को प्रस्तुत रहते हैं। पर कल्पवास में दूसरे का अन्न खाने वाले को विनिमय में अपना पुण्यफल दे देना पड़ता है, इसी से ये सब अपनी-अपनी गठरी-मुटरी में खाने-पीने का सामान लेकर घर से निकलते हैं। पर वस्तु-वस्तु का विनिमय वर्ज्य नहीं माना जाता चाहे विनिमय वाली वस्तुओं में कितनी ही असमानता क्यों न हो: कोई गुड़ की एक डली रखकर ठकुरी बाबा से आधा सेर आटा ले जाता, कोई चार मिर्चे देकर आलू-शकरकन्द का फलाहार प्राप्त कर लेता है, कोई पत्ते पर तोला भर दही रखकर कटोरा भर चावल नापता है, तो कोई धूप के लिए रत्ती भर घी देकर लुटिया भर दूध चाहता है।"[९] प्रस्तुत उद्धरण के माध्यम से महादेवी वर्मा जी ने कुम्भ के मेले और मेले में पहुँचने वाले भक्त-भक्तिनियों सहित ठकुरी बाबा का विशेष वर्णन उनकी दानशीलता और सदाशयता के सार में किया।

'अपनी बात' शीर्षकान्तराल में महादेवी जी ने लिखा है– "इन स्मृति चित्रों में मेरा जीवन भी आ चुका है। यह स्वभाविक भी था। अँधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश का धुँधली या उजली परिधि में रखकर ही देख पाते हैं, उसे बाहर तो वे अनंत अंधकार के अंश है।"[१०]

© Copyright @ Authors

निष्कर्ष–

अस्तु, हम कह सकते हैं कि द्विवेदी युगीन कवयित्री लेखिका सुभद्रा कुमारी चौहान और छायावादी कवयित्री-लेखिका महादेवी वर्मा दोनों ही हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, लेकिन दोनों की लेखन शैली में कुछ अन्तर है। दोनों ने गद्य-पद्य दोनों विधाओं को अपनाया लेकिन सुभद्रा जी की तरह महादेवी जी ने कहानियाँ नहीं लिखीं। महादेवी जी का संस्मरणात्मक कहानियों में पारिवारिक जीवन-संघर्ष व्यापक, जटिल और बहुआयामी है। दोनों के पारिवारिक जीवन संबंधी रचनाओं से स्पष्ट होता है कि सात्विक और मानवीय गुणों से संस्कारित और लक्ष्यजयी होता है, लेकिन असात्विक और असंस्कारी परिवार में पारिवारिक जीवन कटी पतंग की तरह होता है।

सन्दर्भ–

1. दृष्टिकोण - सुभद्रा समग्र, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण-2014, पृ. सं. - 41
2. होली, पृ. 13
3. राष्ट्रीयता- सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना– लेखक - डॉ० संजय कुमार सिंह, 2013 कला एवं धर्म शोध संस्थान, वाराणसी ... प्राक्कथन III
4. राही, पृ. 221
5. महादेवी-साहित्य- खण्ड तीन, सम्पादक- निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2017, पृ. 09
6. वही, पृ. 16
7. वही, पृ. 30
8. वही, पृ. 48
9. वही, पृ. 124
10. महादेवी साहित्य- सम्पादक निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 2017, पृ. 05

© Copyright @ Authors